

विदेश मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या - 1099
दिनांक 25.07.2025 को उत्तर दिए जाने के लिए

हिंद महासागर में चीन की उपस्थिति

1099. प्रो.सौगत राय:

क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए एक रणनीतिक चुनौती है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या चीन दोहरे उपयोग के उद्देश्यों के लिए बंदरगाहों, हवाई अड्डों और रसद क्षेत्र को केंद्रित करते हुए कई बुनियादी ढांचागत परियोजनाएं शुरू कर रहा है, जो हमारी सुरक्षा के लिए खतरा होंगी और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या चीन समुद्री क्षेत्र जागरूकता बढ़ाने और हिंद महासागर क्षेत्र से संवेदनशील समुद्र विज्ञान और समुद्री आंकड़े एकत्र करने के लिए इस क्षेत्र में अनुसंधान और सर्वेक्षण जहाजों को तैनात कर रहा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विदेश राज्य मंत्री
[श्री कीर्तवर्धन सिंह]

(क) से (ग) सरकार चीन के 'समुद्री शक्ति' बनने के घोषित उद्देश्य से अवगत है। इस रणनीति के तहत, चीन हिंद महासागर क्षेत्र के तटवर्ती देशों में बंदरगाहों और अन्य अवसंरचना सुविधाओं का विकास कर रहा है। चीन की हिंद महासागर क्षेत्र में नौसैनिक और सामुद्रिक उपस्थिति भी है, जिसमें समुद्री डकैती-रोधी अनुरक्षण अभियान, बंदरगाहों पर तैनाती और अनुसंधान एवं सर्वेक्षण पोतों की तैनाती शामिल है।

सरकार हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सुरक्षा और आर्थिक हितों पर प्रभाव डालने वाले सभी घटनाक्रमों पर बारीकी से नजर रखती है तथा भारत के हितों की रक्षा के लिए उचित उपाय करती है।

हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ हमारे संबंध व्यापक और दीर्घकालिक हैं, जो उनकी अपनी विशेषता पर आधारित हैं और किसी भी अन्य देश के साथ उनके संबंधों से स्वतंत्र हैं। श्रीलंका, मालदीव और मॉरीशस जैसे देश भारत की 'पड़ोस प्रथम' नीति और महासागर (क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति) दृष्टिकोण में केंद्रीय स्थान रखते हैं। इस क्षेत्र के देशों के साथ हमारे राजनीतिक संबंध मज़बूत हैं, व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाया जा रहा है, विकास परियोजनाओं और अवसंरचनात्मक सहयोग में प्रगति हो रही है, और सभी क्षेत्रों में व्यापक संबंध है।
